

नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

बुधवार को विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया. 56 वें पृथ्वी दिवस पर सवाल सीधा है कि क्या हम सच में अपनी धरती को बचाने के लिए तैयार हैं, या फिर यह दिन भी सोशल मीडिया पोस्ट और प्रतीकात्मक वृक्षारोपण तक सीमित रह जाएगा ?

वास्तविकता यह है कि हमने विकास के नाम पर प्रकृति के साथ संतुलन नहीं, बल्कि संघर्ष का रास्ता चुना है. शहरीकरण की अंधी दौड़, जंगलों की अंधाधुंध कटाई और प्राकृतिक संसाधनों का बेलागाम दोहन आज पर्यावरण असंतुलन की सबसे बड़ी वजह बन चुके हैं. जैव विविधता का तेजी से ह्रास हो रहा है. जिन वन्यजीवों के साथ यह पृथ्वी साझा थी, उनके आवास नष्ट हो रहे हैं और अनेक प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर पहुंच चुकी हैं. यह केवल पर्यावरण का संकट नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व पर मंडराता खतरा है. प्रदूषण की स्थिति और भी चिंताजनक है.

पृथ्वी दिवस : संकल्प नहीं, निर्णायक कार्रवाई जरूरी

हवा जहरीली हो चुकी है, नदियाँ विषाक्त हो रही हैं और मिट्टी अपनी उर्वरता खोती जा रही है. इसका सीधा असर हमारे स्वास्थ्य, कृषि और अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है. सवाल यह है कि क्या हम इस संकट को केवल आंकड़ों में देखकर संतुष्ट हो जाएंगे, या इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाएंगे ?

ग्लोबल वार्मिंग अब किसी भविष्यवाणी का विषय नहीं, बल्कि वर्तमान का कठोर सच है. पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है और इसके परिणाम हमारे सामने हैं. ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है और मौसम का मिजाज अनिश्चित होता जा रहा है. कहीं भीषण बाढ़ है तो कहीं लंबा सूखा, कहीं चक्रवातों की तीव्रता बढ़ रही है. वैज्ञानिक स्पष्ट चेतावनी दे चुके हैं कि यदि

तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस के भीतर नहीं रोका गया, तो परिणाम विनाशकारी होंगे. इसके बावजूद वैश्विक और स्थानीय स्तर पर प्रयास अपेक्षित गति से आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं.

ऐसे में यह समझना जरूरी है कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारों या अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं है. यह हर नागरिक का कर्तव्य है. बड़े-बड़े भाषणों और घोषणाओं से अधिक प्रभाव छोटे-छोटे व्यवहारिक बदलावों से आता है.

सिंगल-यूज प्लास्टिक से दूरी, ऊर्जा की बचत, जल संरक्षण, और नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों को अपनाना, ये कदम मामूली लग सकते हैं, लेकिन इनका सामूहिक प्रभाव बहुत बड़ा हो सकता है. वृक्षारोपण भी तभी साथक

है, जब उसे अभियान नहीं, जिम्मेदारी के रूप में लिया जाए. पेड़ लगाना आसान है, लेकिन उसे बचाकर बड़ा करना ही असली पर्यावरण सेवा है. इसी तरह 'सतत जीवनशैली' को अपनाना समय की मांग है, जहां उपभोग सीमित हो और अपशिष्ट न्यूनतम.

दरअसल, पृथ्वी के पास हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हमारे लालच के लिए नहीं. यदि हमने अब भी अपनी जीवनशैली और विकास मॉडल पर पुनर्विचार नहीं किया, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक असुरक्षित और असंतुलित दुनिया छोड़ जाएंगे.

विश्व पृथ्वी दिवस हमें यही संदेश देता है कि अब प्रतीकात्मकता नहीं, बल्कि निर्णायक कार्रवाई का समय है. हमें उपभोक्ता नहीं, संरक्षक बनना होगा. क्योंकि अंततः यह सच अटल है, पृथ्वी बचेगी, तभी मानव सभ्यता भी बचेगी.

ट्रेनों को गति



अश्विनी वैश्याव

भारत भर में प्रतिदिन 25,000 से अधिक ट्रेनें चलती हैं. ये ट्रेनें प्रतिदिन 2 करोड़ से अधिक यात्रियों को ले जाती हैं और 1,37,000 किलोमीटर से अधिक लंबी

पटरियों के जाल पर कोयला, लौह अयस्क, अनाज, इस्पात, सोमेट और अन्य वस्तुओं की भारी मात्रा में ढुलाई करती हैं. पटरी ही वह आधार है जिस पर यह पूरी व्यवस्था टिकी है. जब पटरी अच्छी स्थिति में होती है, तो ट्रेनें अधिक गति से सुरक्षित रूप से चलती हैं. खराब पटरी के कारण गति सीमा, देरी और सुरक्षा संबंधी जोखिम जैसी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं. टूटी हुई पटरी, ढीला जोड़ या अवरुद्ध सिग्नल, ये सभी चीजें ट्रेन की गति को प्रभावित कर सकती हैं.

पटरियों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, भारतीय रेलवे ने एक दशक पहले एक व्यापक आधुनिकीकरण कार्यक्रम शुरू किया था. इस कार्य में आधुनिक मशीनों का उपयोग करके पटरियों का नवीनीकरण, उन्नत विधियों द्वारा परीक्षण और निरीक्षण, मशीनीकृत रखरखाव, सुरक्षा बाड़ लगाना आदि शामिल थे. इन सभी प्रयासों से रेलवे नेटवर्क की स्थिति में स्पष्ट रूप से सुधार

रेल पटरियों का आधुनिकीकरण

लगभग 17,500 किलोमीटर लंबी सुरक्षा बाड़ लगाई गई है, खासकर उन जगहों पर जहां ट्रेनें 110 किमी प्रति घंटे से अधिक की गति से चलती हैं, जिससे लोगों और मवेशियों द्वारा अतिक्रमण को रोकने में मदद मिलती है. विभिन्न चौराहों और क्रॉसिंग पर 36,000 मोटे-जाल वाले रिवर और 7,500 वेल्ड करने योग्य सीएमएस क्रॉसिंग लगाए गए हैं - ये अधिक समय तक चलते हैं और ट्रेनों की सुगम आवाजाही सुनिश्चित करते हैं. 2019 में अपनाई गई चौड़ी और भारी स्लीपरों स्थिरता में सुधार करती हैं, विशेष रूप से गर्मी के मौसम में. गर्डर पुलों पर एच-बीएम स्लीपर और याडों से गुजरने वाली लंबी वेल्डेड रेल पटरियों ने नेटवर्क को और मजबूत बनाया है.

हुआ है. 2014 से अब तक लगभग 55,000 किलोमीटर पटरियों का नवीनीकरण किया जा चुका है, जिससे सुरक्षा और यात्रा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है और बार-बार मरम्मत की आवश्यकता कम हुई है. लगभग 44,000 किलोमीटर लंबी रेल पटरियां (प्रत्येक 260 मीटर) बिछाई गई हैं. लंबी पटरियों का मतलब है कम जोड़, जिससे ट्रेनों का सूचारु और सुरक्षित संचालन सुनिश्चित होता है. 80,000 किलोमीटर से अधिक मजबूत 60 किलोग्राम की पटरियां अब उपयोग में हैं, जो भारी भार और उच्च गति को सहन कर सकती हैं. मजबूत रेल बिछाना महत्वपूर्ण है, लेकिन समस्याओं का जल्द पता लगाना भी उतना ही जरूरी है.

लगभग 36.2 लाख किलोमीटर ट्रेक और 2.25 करोड़ वेल्ड पर अल्ट्रासोनिक फ्लॉ डिटेक्शन परीक्षण किया गया है,

जिससे रेल के अंदर छिपी दरारों का पता लगाया जा सकता है जो बाहर से दिखाई नहीं देतीं. इसके परिणामस्वरूप, रेल और वेल्ड की विफलताएं लगभग 90% तक कम हो गई हैं, यानी समस्या होने के बाद उसे ठीक करने के बजाय उसे पहले से ही रोकने की दिशा में बदलाव आया है. अब उपयोग में लाई जा रही अन्य विधियों में फ्लैश-बट वेल्ड के लिए फेज्ड-एरे परीक्षण, नए वेल्ड के लिए मैग्नेटिक-पार्टिकल निरीक्षण और जीपीएस-सक्षम ऑसिलेशन मॉनिटरिंग सिस्टम (ओएमएस) शामिल हैं जो ट्रेक की गुणवत्ता को मापते हैं और ट्रेक पर खुरदुरे धब्बों की सटीक स्थिति का पता लगाते हैं. ट्रेक मशीनों का बेड़ा 2014 में 748 से बढ़कर 2026 में 1,785 हो गया है. ये मशीनें टैंपिंग, गिट्टी की सफाई और रेल ग्राइंडिंग का काम मैनुअल काम की तुलना में बेहतर, तेज और अधिक समान रूप से

क्या लोकसभा में 850 सदस्य चाहिए ?

भारत की आबादी वर्ष 2060 की शुरुआत तक 160 करोड़ हो जाने की संभावना व्यक्त की जा रही है. इस दौरान लोकसभा की सीटें वर्तमान 543 से बढ़कर 850 करने के प्रस्ताव पर चर्चा होने लगी है. क्या आबादी का प्रतिनिधित्व सांसदों की तादाद बढ़ाने से हो जाएगा? कुछ चुनाव क्षेत्रों की आबादी ज्यादा है तो कुछ की कम. इसलिए चुनाव क्षेत्रों की पुनर्रचना या डिजिटल डिवाइजन की बात हो रही है. अमेरिका में 1929 से हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव या प्रतिनिधि सदन के सदस्यों की संख्या 435 वती आ रही है. जबकि इन 97 वर्षों में उस देश की आबादी 3 गुना बढ़ गई है. सांसदों की बड़ा विधायकों की तादाद बढ़ाना उचित रहेगा ताकि ज्यादा अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व हो सके. यह तर्क दिया जाता है कि सांसदों की संख्या बढ़ाने से प्रतिनिधित्व व्यापक हो सकेगा. यदि देखा जाए तो कितने ही सांसद ऐसे हैं जो अपने 5 वर्ष के कार्यकाल में मुंह नहीं खोलते. पार्टी उनका सिर्फ किसी बिल पर वोटिंग के दौरान अपना संख्याबल दिखाने के लिए इस्तेमाल करती है. वह अपने क्षेत्र की समस्याएं नहीं उठाते वरन् वर्योक्ति सदन की बहस में सिर्फ पार्टी के वरिष्ठ नेता भाग लेते हैं. बड़ी मुश्किल से कोई प्राइवेट



मेम्बर बिल चर्चा के लिए आता है. लोकसभा की सदस्य संख्या लगभग दोगुनी करने से सांसदों के वेतन-भत्ते-पेंशन का भार सरकारी खजाने पर बहुत बढ़ जाएगा. दिल्ली में इनके लिए अतिरिक्त बंगालों की व्यवस्था करनी होगी. यह कहना बेमालुब है कि बड़ा चुनाव क्षेत्र रहने से सांसद को जनसंपर्क करना मुश्किल हो जाता है. 25-30 साल पहले तक ऐसी दिक्कत रही होगी लेकिन आज तो सड़कें बन गई हैं, रेलमार्ग व हेलीकॉप्टर सेवा का विस्तार हुआ है. स्मार्टफोन तथा इंटरनेट संपर्क उपलब्ध है. इसलिए ग्रामीण क्षेत्र व अर्धशहरी इलाकों में भी जनसंपर्क आसान हो गया है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12237 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5	6
7		8	9		
10		11			
	12		13		
14		15			
16		17		18	
	19	20			
21				22	

या खगोल का चित्र 22. जान, जीवन (सं.)

ऊपर से नीचे

1. बुरा भोजन, निष्कृष्ट एवं गंदी चीजें खाना (सं.)
2. नभ, विनयी, सम्माननीय (सं.)
3. कुहरा, ओस (सं.)
4. सूर्य 5. सहायता करने वाला, सहकारी
6. गड्ढा, गुफा, विदारण, द्वार, भाव
7. एक सी वस्तुओं की माला
8. आमद, आना
9. श्रीकृष्ण
10. नदी या समुद्र का सामने वाला दूसरा तट
11. कच्चा न रह जाना, फल आदि का पुष्ट होकर खाने योग्य होना, फोड़े या घाव में मवाद पड़ना
12. प्रस्थान, जाना
13. आईना, आरसी
14. ध्वनि, गुंजार, शब्द, आवाज

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा, प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी. पद का लाभ प्राप्त होगा. व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी. धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वर्ष के अन्त में शत्रु वर्ग से कष्ट होगा. मित्र के कारण कार्य में व्यवधान आ सकता है. व्यर्थ के वाद विवाद से दूर रहें.

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों

मेघ - अनुभव की कमी आपको उलझा सकती है, नवीन योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, अतिथि आगमन होगा, यश प्राप्त होने का योग है.

वृश्चिक - नया कार्य शुरू करने से पहले अच्छी तरह सोच समझ लें, बाद में परेशानी होगी, अधिकारियों की बातचीत में सफलता मिलेगी, संयम से काम करना लाभदायक रहेगा.

मिथुन - स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव बना रहेगा, परिचितों की मदद करके प्रसन्नता मिलेगी, वैभव विलासिता की वस्तुओं का संयच होगा.

कर्क - दौड़पुप के बावजूद बड़ी सफलता मिलना मुश्किल है, अनहोनी का भय रहेगा, निजी कार्यों में रुचि बढ़ेगी, पुरुषार्थ बना रहेगा.

सिंह - कामकाज में आ रही मुश्किलें दूर होंगी, भवनात्मक संबंधों में चल रहा गतिरोध दूर होगा, वैभव विलासिता की वस्तुओं में रुचि रहेगी, दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी.

कन्या - रुचि का काम मिलने से खुशी होगी, आय में बढ़ोतरी होगी, संतान पक्ष से सुख एवं सहायता प्राप्त होगा, जोखिम पूर्ण कार्यों से बचने का प्रयास करें.

तुला - दौड़पुप से नुकसान की भरपाई कर लेंगे, सुख सुविधा पर खर्च की संभावना है, किसी प्रिय व्यक्ति से विवाद या विवाहघात हो सकता है.

वृश्चिक - तनाव की स्थिति में फैसला लेना बेकार होगा, समाज में मान सम्मान बढ़ेगा, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी, दूसरों से सहयोग मिलने से दुख रहेगा.

धनु - दुविधा की स्थिति आगे बढ़ने में बाधक हो सकती है, पारिवारिक यात्रा संभव है, वाहन जोखिम कार्यों से बचने का प्रयास करें.

मकर - कानूनी मामले हल होंगे, आपसी लीज जानबूझकर नुकसान कर सकते हैं, सावधानी रखें, भाग्यवर्धक प्रयासों में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें.

कुम्भ - विवादास्पद मामले आपसी बातचीत में सुलझ सकते हैं, शासन सत्ता से सहयोग मिलेगा, रुके कार्यों में गति आयेगी, पुरानी मित्रता उपयोगी रहेगी.

मीन - कार्यस्थल की समस्याओं का समाधान होगा, सहकर्मी नीचा दिखाने का प्रयास कर सकते हैं, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी, मांगलिक कार्यों में खर्च होगा.

Solution 12236

प्र	ति	श्रा	ति	त	ज	ल
ला	ल	ता	इ	न	ह	
प	म	प	रि	वा	र	
	प	ल्ल	व	ना	सा	दा
उ	र	ज	अ	र		
पा	फौ	ह	रि	ज	न	
स	इ	क	या	ग	न	
ना	क	न	ज	र	ब	द

निशानेबाज मोदी ने दिया विपक्ष को शाप नारी शक्ति नहीं करेगी माफ

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, प्राचीन काल में तपस्वी ऋषि-मुनि क्रोधित होने पर शाप दे दिया करते थे. अब केदारनाथ की गुफा और कन्याकुमारी में ध्यान लगाकर तपस्या कर कुछ प्रधानमंत्री मोदी ने भी पापियों को पहचानकर उन्हें शाप दिया है. उन्होंने कहा कि जिन विपक्षी दलों ने नारी शक्ति वंदन बिल को संसद में गिराया है उन्हें उनके इस महापाप के लिए महिलारं कभी माफ नहीं करेगी.'

हमने कहा, 'इस भयानक शाप से तृणमूल कांग्रेस तिनके के समान बिखर जाएगी. मोदी के सामने क्षमायाचना करते हुए ममता बनर्जी त्रिहोमाम कहते हुए साफगंध दंडवत करने लगेगी. पौराणिक युग में जिसे शाप दिया जाता था, वह पत्ते की तरह कांपने लगता था. बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी ऋषि मुनियों के शाप से डरते थे. उनके दरबार में आते ही हाथ जोड़कर खड़े हो जाते थे और उनके थूल भरे चरणों को धोते थे.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आप सतयुग, त्रेतायुग और द्वापर की बातें कर रहे हैं. कलियुग में किसी का दिया हुआ शाप असर नहीं करता. इसलिए विपक्ष और खास तौर पर



ममता बनर्जी को डरने की जरूरत नहीं है.

हमने कहा, 'यदि पौराणिक काल की बात की जाए तो शाप देने के मामले में दुर्वासा नंबर वन थे. एक बार उन्होंने सुगंधित पुष्पों की माला देवराज इंद्र को दी. इंद्र ने माला स्वयं न पहनकर अपने ऐरावत हाथी को पहना दी. हाथी ने सूड से माला उतारकर अपने पैरों से कुचल डाली. इस अपमान से

क्रोधित होकर दुर्वासा ने इंद्र को शाप दे डाला. इसी तरह गौतम मुनि ने भी अपनी पत्नी अहिल्या का छल से विनयभंग करने पर इंद्र और उसके सहयोगी चंद्रमा को शाप दिया था. दुर्वासा का इतना दबदबा था कि उन्होंने श्रीकृष्ण व रविमणि से अपना रथ खिंचवाया था और अपनी जूटी पिचड़ी श्रीकृष्ण के बदन पर चुपड़ दी थी. उर्वशी नामक अप्सरा का प्रणय निवेदन अर्जुन ने ठुकरा दिया था तो उर्वशी ने उन्हें 1 वर्ष के लिए पुरुषत्वहीन बृहन्नला बन जाने का शाप दिया था. पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, राजनीति में मतलब पुरा नहीं होने पर नेता अपने विरोधियों को कोसा-सरापा करते हैं लेकिन किसी का कुछ भी नहीं बिगड़ता. इतना जरूर है कि किसी गरीब की बददुआ नहीं लेनी चाहिए क्योंकि संत कबीर ने कहा था- कबहूँ न सताइए गरीब को, जाकी मोटी हाथ, मुए चाम की आह से लोह भस्म हुई जाए, इसका अर्थ है- किसी गरीब को मत सताओ. लोहार की धौंकनी में मरे हुए पशु के चमड़े की हवा से आंच भड़कती है और लोहा भी भस्म हो जाता है.'

SUDOKU 7369

4		9		6	1		8
6	8						
	1	7	3	8		4	
3	4		6	7			9
5		1	8		2		7
2		3	5	1		8	4
		3	7	5	8	6	
7		6	2	8			1

रा.मि. 03 संवत् 2083 वैशाख शुक्ल सप्तमी गुरुवार रात 1/16, पुनर्वसु नक्षत्रे रात 1/17, सुकर्मा योगे दिन 10/30, गर करणे सू.उ. 5/36, सू.अ. 6/24, चन्द्रचार मिथुन रात 7/38 से कर्क, शु.रा. 3, 5, 6, 9, 10, 1 अ.रा. 4, 7, 8, 11, 12, 2 शुभार्क- 5, 7, 1.

व्यापार भविष्य

वैशाख शुक्ल सप्तमी को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, स्टील, लोहा, धातु, गेहूँ, जौ, चना, मटर, के भाव में वृद्धि होगी, गुड़ खांड, उड़द, घी, तेल, सरसों, आदि के भाव में मंदी होगी, भाग्यांक 4065 है.

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरें जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति व हो इसका विशेष ध्यान रखें. पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. पहली का केवल एक ही हल है.